ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 6 नवंबर-दिसंबर 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

वर्ष : 12 अंक : 6 ❑ नवम्बर-दिसम्बर, 2020

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो

डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची

डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका

डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा

डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना

डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा

डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्कः

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India

Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोटः पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

गुरु तेग बहादुर जी की शहादत यात्रा : (हरियाणा के ऐतिहासिक स्थान)–सुनील 1840
पन्ना जिले की प्रागैतिहासिक शैलचित्र कला–देवीदीन पटेल 1844
छायावाद: भारतीय साहित्यिक चिन्तन धारा का स्वाभाविक विकास–अजय कुमार सिंह 1847
एक एक्टिविस्ट की कविताओं के मायने (सुधा अरोड़ा की कविताओं के विशेष सन्दर्भ में)–कु० आशा मिश्रा; डॉ० जनार्दन 1851
भोजपुरी लोकनाट्यों में सामाजिक पक्ष–अनुपम यादव 1855
जनजातीय विकास के नवीन आयाम: एक अध्ययन–डॉ० सुधांशु वर्मा 1858
भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली : चुनौतियां और सुझाव–मो० वकार रजा 1861
21वी सदी का परिदृश्य और वृद्ध जीवन–अमिता सिंह; डॉ० परेश कुमार पाण्डेय 1864
अखंड भारत एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय: एक विवेचना–कुलदीप गंगवार 1867
भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में दुर्गा भाभी बोहरा की भूमिका–प्रदीप सिंह 1871
मालती जोशी व मन्नू भंडारी के द्वारा चित्रित नारी की दशा–डॉ० नम्रता जैन 1873
उपनिवेशवाद के दौर में भारतीय कृषि का रूपान्तरण एवं उसके सामाजिक परिणाम–डॉ० राम सुन्दर यादव 1875
अज्ञेय के काव्य में दलित-चेतना–रचना तनवर 1878
कानपुर में धर्म सुधार आन्दोलन की प्रतिध्वनि–डॉ० प्रीती त्रिवेदी 1881
महिला सशक्तिकरण: एक आलोचनात्मक विश्लेषण–शाजिया सुल्तान 1884
भारत में मतदान व्यवहार–डॉ० विनीता गुप्ता 1887
बुन्देलखण्ड एवं बुन्देला: एक संक्षिप्त अध्ययन–रविन्द्र प्रताप सिंह 1890
आधुनिक संप्रेषण माध्यमों के बीच 'संवदिया' की प्रासंगिकता–डॉ० अमिता यादव 1894
प्राचीन भारत की कुछ प्रमुख क्रीड़ाएँ–डॉ० अनिल कुमार सिंह 1897
बिहार के नक्सल आन्दोलन में दलित महिलाओं की सहभागिता–श्वेता कुमारी 1900
मोदी सरकार II: अंत्योदय, सुरक्षा और राष्ट्र साधना का एक वर्ष–स्वदेश सिंह 1905
मुगल चित्रकला: अकबर काल के चित्र एवं चित्रकारों के सन्दर्भ में–रघु यादव 1908
व्याकरणिक दक्षता के उन्नयन में आगमन-निगमन विधि की प्रभाविता का अध्ययन–डॉ० प्रियंका रावल 1911
नई शिक्षा नीति 2020 का उच्च शिक्षा पर प्रभाव: एक समाजशास्त्री अध्ययन–ओम प्रकाश 1918
लिंगानुपात: फर्रुखाबाद जनपद का जनांकिकीय विश्लेषण–डॉ० प्रभात सिंह 1921
स्वामी विवेकानन्द के मानवतावादी चिंतन व कर्मशीलता की शिक्षक-शिक्षा के नीति-निर्माण में प्रासंगिकता–डॉ० अजय कुमार सिंह 1927
रोजगार सृजन में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP) की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० विजय ग्रेवाल; नीलम कुशवाह 1932
वृधावस्था की अवस्था: समस्याए एवं सुरक्षा–डॉ० जया भारती 1936
अर्वाचीन संस्कृत काव्य भाति में भारतम् में राष्ट्रीय भावना–डॉ० मीना गुप्ता 1940
डाकघर द्वारा संचालित सुकन्या समृद्धि खाता योजना में निवेश निष्पादन का अवलोकन–डॉ० विजय ग्रेवाल 1944
हिन्दी उपन्यास साहित्य में दस्तक देता वृद्ध विमर्श–डॉ० निम्मी ए. ए. 1949
ग्रामीण विकास और मनरेगा–डॉ० मिथिलेश पासवान 1951
अनुसूचित जनजाति महिला का प्राथमिक शिक्षा में सहभागिता - धुले (महाराष्ट्र) जनपद एक भौगोलिक विश्लेषण–संजय बी० घोंडसे 1956
साहित्य में विचारधारा–डॉ० कुलदीप कौर पाहवा 1959
मधुबनी की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि–श्वेता 1963
रोमेश चन्द्र दत्त-एक महान् बंगाली साहित्यकार–डॉ० तेजवीर सिंह; अजय यादव 1968

अर्वाचीन संस्कृत काव्य भाति में भारतम् में राष्ट्रीय भावना

डॉ० मीना गुप्ता

एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पी0पी0एन0 कालेज, कानपुर

"या संस्कृति प्रथमा विश्ववारा"

विश्व साहित्य के प्राचीनतम् वाङ्मय वेदों में राष्ट्रीय भावना एवं लोक कल्याण की भावना का सर्वप्रथम निदर्शन प्राप्त होता है। राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति राष्ट्र और समाज के प्रति व्यक्ति के कर्त्तव्य, उत्तरदायित्व तथा समर्पण की भावना, राष्ट्र के प्रति गौरव का बोध तथा राष्ट्र के प्रतीक चिन्हों द्वारा होती है।

राष्ट्र भावनात्मक एवं एकात्मकता से बनता है राष्ट्रीय पहचान की स्थापना, देश में रहने वाले लोगों को एकजुट महसूस करने में मदद करता है। संस्कृत से ही संस्कार है, संस्कृत राष्ट्रभावना को प्रेरित करने वाली भाषा है। डॉ0 महावीर अग्रवाल ने इस सम्बन्ध में कहा है कि संस्कृत भाषा ने ही राष्ट्र धर्म की बात की है।

"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा"

प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने राष्ट्रीय भावना के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि संस्कृत का समग्र साहित्य राष्ट्रीय भावना से भरा पड़ा है राष्ट्रीयता को इस साहित्य में भौगोलिक सीमा के बंधन में नहीं बांधा गया है हमारी संस्कृति ने ईराक-ईरान तक के क्षेत्र में अपनी पताका फहराई है रोम से लेकर अन्य सभ्यताओं में इसकी स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है।[1] संस्कृत के प्रसिद्ध कवि कालिदास जैसे महाकवियों ने इसे स्थापित करने में महान भूमिका निभाई है। यदि संस्कृत नहीं होगी तो भारत नहीं होगा और फिर विश्व की कल्पना नहीं की जा सकती। अर्थात् भारत की सत्ता उसकी प्राणभूता संस्कृति पर ही प्रतिष्ठित है और संस्कृति संस्कृत पर आधृत है। सम्पूर्ण देश को भारतमाता जैसे पवित्र शब्द प्रदान करने वाली भी संस्कृत भाषा है। सम्पूर्ण धरती में परिवार का भाव भरने वाली भी संस्कृत है।

अयंनिज परोवेत्ति गणना लघुचेतसाम,
उदार चरितात्रां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।
'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या'[2]

की विचारधारा से युक्त हमारे देश की संस्कृति ने सदैव अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का व विश्वबन्धुत्व का आदर्श उपस्थापित किया है और विश्व के समस्त प्राणियों के कल्याण की कामना करते हुए सर्वेभवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया: की मंगलभावना भी अभिव्यक्त की है। वैदिक साहित्य से लेकर अधुनातन साहित्य तक यदि हम दृष्टिपात करें तो पग-पग पर हमें राष्ट्रीय एकता व लोक कल्याण की भावना दृष्टिगत होती है जिसका वंदन, आचरण, भारत देश के हर प्राणी के सर्वांगीण विकास में निहित है - हम सभी राष्ट्र के उत्थान में सहायक बनें ऐसा वेदों का कथन है -

वयं राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहिताः।

वैदिक काल से लेकर 19वीं शताब्दी में और 20वीं शताब्दी में भी उच्च कोटि के संस्कृत साहित्य सृजन की परम्परा अबाध गति से प्रवाहमान हो रही है 19वीं शताब्दी में संस्कृत गीति काव्यों में राग काव्य, सन्देश काव्य, दूत काव्य आदि विधाओं में रचनाएं लिखी गई कवियों ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से प्रकृति के वैविध्यमयी रूप राष्ट्रभक्ति, ईश्वरभक्ति, प्रिया-विरह आदि को अपनी सहज भाषा में अपने गीतिकाव्यों में मुखरित किया है इसका प्रादुर्भाव जयदेव के 'गीतगोविन्द' से माना जाता है किन्तु स्वतंत्रता पूर्व काव्यों में जो देश-प्रेम की भावना व्याप्त थी वह गीतिकाव्यों के माध्यम से ही अभिव्यक्ति को प्राप्त हुई इसका बहुत ही सुन्दर उदाहरण हमें बंकिम चन्द्र के 'आनद मठ' के गीत से प्राप्त होता है -

वन्दे मातरम्,
सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्,
शस्य श्यामलां मातरम् वन्दे मातरम्।
संस्कृत बंगला मिश्रित गीत (आनन्दमठ) प्रकाशन 1882, रचना 1876